

वि पूर्तयो नवत्त लोपयो यथा RV. 10, 22, 9.

4. नु 1) m. a) Waffe. — b) Zeit. — c) Boot (doch wohl nur am Ende eines comp.; vgl. नौ). — 2) (= 2. नु) Preis, Lob ÇABDĀRTHAK. bei WILS.

नुड्, नुडैति schlagen, tödten (बधे) VOP. in Dhātup. 28, 92. — समानोड्य MBh. 3, 11477 Druckfehler für समालोड्य, wie schon West. bemerkt hat.

नुति (von 2. नु) f. Lob, Preis AK. 1, 1, 5. 12. H. 269. HALĀJ. 1, 145. प-रगुणनुतिभिः स्वान्गुणान्ध्यापयतः BHARTR. 2, 59, v. l. Ehrenerweisung ÇABDAR. im ÇKDr.

1. नुद, नुदति, ऽते Dhātup. 28, 2. 132. प्रणुद्यात् HARIV. 7442. नुनोद, नुनुरे; धनौत्सीत्, red. नुत्थाम्, अनुत्त; नोत्स्यति, ऽते Kār. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10; partic. नुत्त und नुन्न P. 8, 2, 56. VOP. 26, 98. प्रणुदित MBh. 1, 6670. संप्रणुदित 3, 377. stossen, fortstossen, rücken; vertreiben, austreiben, verscheuchen, entfernen: नुदस्व याः परिस्पृष्टः RV. 9, 33, 1. 63, 24. ऋभेदं वलं नुनुदे विवाचः 3, 34, 10. धर्वाच्चं नुनुदे वल्म 8, 14, 8. 1, 83, 10. ऊर्ध्वं नुनुद्ग उत्साधं पिबद्यै in die Höhe stemmen, lüpfen 89, 4. तं परावत्मिन्द्रो नुदतु AV. 6, 75, 2. 124, 2. 9, 2, 15. 12, 1, 32. Çat. Br. 1, 9, 8, 11. 11, 3, 5, 8. 9. तांस्तथैभ्यो लोकेभ्यो ऽनुदत्त Ait. Br. 1, 23. भागिनं भागानुदत्ते 2, 7. 3. 14. 50. पराची वाचा (निर्णीते) नुदामि TBr. 3, 1, 2, 3 in Z. f. d. K. d. M. 7, 271. RV. Prāt. 11, 20. मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा वाम् (मेघ) Megh. 9. नुदति नृपः सपत्नान् MBh. 3, 374. 4. 1395. Vārāha-P. in Verz. d. Oxf. H. 37, a, 17. आदित्यो दिवि देवेषु तमो नुदति तेजसा । तथैव नृपतिर्भूमावधर्मावुदते भृशम् ॥ MBh. 3, 12707. अहं पापं नुदामि ते 1, 3391. (एनः) सर्वं तनुदते पश्चाद्यज्ञैः 3, 1341. 12, 6634 (vgl. 3, 1589). Suçr. 2, 360, 7. वामेतरः संशयमस्य बाहुः केयूरबन्धोच्छूम्नितैर्नुनोद Ragh. 6, 68. आत्मापरार्धं नुदतो विराय शुभ्रूषया 16, 85. लपयति च रिपुं शोकश्च नुदति Vārāha. Brh. S. 104, 6. pass.: नृपतेर्व्यजनादिभिस्तमो नुनुदे Ragh. 8, 40. schleudern: नुनोद शाखिमन् BHATT. 14, 109. weitertreiben, antreiben: सूतस्य नुदतो वाकान् MBh. 3, 15739. नुत्त und नुन्न fortgestossen, fortgedrängt AK. 3, 2, 37. H. 1482. HALĀJ. 4, 82 (wo wohl नुत्तं st. तुत्तं zu lesen ist). ग-दानुने मरुसुरे MBh. 3, 679. (गद) अर्जुनेन शैर्नुन्ना प्रतिमार्गमथागमत् 4, 1819. ज्ञायो पत्या नुत्ता verstossen AV. 10, 1, 3. 8, 8, 19. 9, 2, 4. तेक्षिर्नुन्न इव द्विपः angetrieben R. 2, 40, 41. — Vgl. NOYDHTH, HĀDHTH (schon von MIKLOSICH verglichen). NOYDĀ, HĀDĀ, Noth.

— caus. नोदयति antreiben: तान्क्यान् । अनोदयत् प्राचोदयत् MBh. 3, 12095. Arā. 6, 17. ते नोद्यमानां चोद्यमाना MBh. 3, 2794. विधिवद्वाङ्मकेन कृत्योत्तमाः N. 19, 22. नोदयाश्चान् Çāk. 7, 20. v. l. für चोदय. नोदित v. l. für चोदित, देशित Spr. 463. मातङ्गाः — अङ्कुशाङ्कुशेनोदिताः MBh. 9, 1005. विज्जुना नास्मि नोदितः R. 5, 46, 12. तेषां सूतमनोदयत् Vāju-P. in Verz. d. Oxf. H. 47, a, 5 v. u.

— intens. wiederholt wegstossen, vertreiben: तान्विश्वे देवा अनोनुद्यत Ait. Br. 3, 30.

— अति vorüberreiben: यत्नैर्वा वीरुद्भिरतिनुतो नाव्या एतु क्षोत्याः AV. 8, 7, 15.

— अप fortstossen, vertreiben, verscheuchen RV. 1, 167, 4. अप मधो नुदस्व 3, 47, 2. 10, 131, 1. अप मृत्यु नुदतु AV. 12, 3, 49. 10, 1, 1. अपाघशंसं नुदतामरातिम् TBr. 3, 1, 4, 13. 44 in Z. f. d. K. d. M. 7, 267. 269. 270. त्रारां रोगमपनुद्य शरीरात् Çāk. Grh. 3, 8. Kauç. 48, 97. VS. 28, 13. यः — अतौक्षिणाशतमपानुदत् Bhāg. P. 1, 16, 35. धनवृक्षमपानुदत् MBh. 14,

1853; vgl. अपा. ममापनुद्याद्यच्छेकम् Bhāg. 2, 8. Çāk. zu Brh. Ār. Up. S. 132. BHĀG. P. 5, 8, 17. KULL. zu M. 11, 86. 115. BHATT. 10, 13. Vgl. अप-पनुत्ति, ऽनुद, ऽनादे fgg. — caus. = simpl.: अपनोदित (भय) Çāk. zu Brh. Ār. Up. S. 132. — desid. s. अपनुनुत्सु.

— व्यप vertreiben, verscheuchen: अलत्नो व्यपनोत्स्य MBh. 3, 10695. शोकं राक्षस्यपनुद 11, 24. तेषां अमम् — व्यपानुदत् 7, 3740; vgl. व्यपा und व्यपनुत्ति.

— अभि Jmd stossen, drängen: दण्डकाष्ठाभिनुन्नाङ्गी (बभूधरा खायमा-ना) MBh. 14, 1718. — caus. antreiben: ततो ऽभ्यनोदयत्कृष्णा युष्मतामि-ति दारुकम् MBh. 14, 1478. मादशेनाभिनादितः 7, 4226. Vāju-P. in Verz. d. Oxf. H. 47, b, 4.

— अव caus. Jmd (acc.) durch Jmd (acc.) wegstreiben lassen: यदि । कुत्रनवानोदयिष्यस्तम् MBh. 7, 3069.

— पर्यव hinastossen d. h. hinschaffen zu (acc.): बलिं क्रियमाणं पन्था-नं पर्यवनुदति PANKAV. Br. 15, 7, 4.

— अपा forttreiben, vertreiben, verscheuchen, entfernen: अभिद्रवार्जुन तिप्रं कुत्रन्नेपादपानुद MBh. 7, 8691. पुरंदरस्य कर्णं त्वं बुद्धिमेतमपानुद 3, 16973. कर्मदोषानपानुदन् (partic.) M. 6, 95. गुरुस्त्रीगमनीयं तु व्रतैरे-भिरपानुदेत् 11, 102. 169. Die unlogische Verbindung der zwei Präposi- tionen ist nur durch das Metrum veranlasst.

— व्यपा entfernen, verscheuchen: परिवेष्टनमेतेषां तिप्रं चैव व्यपानुद MBh. 4, 1319. ज्येष्ठस्य पाण्डुपुत्रस्य शोकं भीष्म व्यपानुद 12, 1836. Auch hier gilt das bei अपा Bemerkte.

— उपा dass.: ततः शेषानुपानुदत् । इषुजालेन मक्ता MBh. 7, 1771. ना-द्य शोकमुपानुदे von sich entfernen, sich befreien von 268. zertrümmern, zerspalten: (कार्मुकम्) तदप्यस्य शितैर्भलैस्त्रिधा त्रिभिरुपानुदत् 6, 5619. Aller Wahrscheinlichkeit nach ist wohl überall अपानु^० zu lesen.

— उप herantreiben: हुतमरुडपनुनैः — अम्बुवाहैः Çiç. 4, 68.

— निस् austossen, wegräumen, austreiben, verscheuchen, entfernen AV. 6, 75, 1. 12, 2, 15. 16. 42. Ait. Br. 4, 6, 5, 11. Kauç. 71. TAITT. Ār. 10. 1, 8. नुधा निर्नुदति (lies निर्णु^०) प्रज्ञाम् MBh. 14, 2780. निर्णुदन्निवास्य चायुः 3, 1590. तच्च निर्णुदति यत्पुरा कृतम् 12, 7126 = 9037. निर्णुदन्पा-पमात्मनः R. 1, 13, 40. von sich stossen, zurückweisen: धाना मत्स्यान्य-यो मांसं शाकं चैव न निर्णुदेत् M. 4, 250. — Vgl. निर्णोद.

— अभिनिस् austreiben, verscheuchen, entfernen: अज्ञानाद्भि कृतं पापं तपसैवाभिनिर्नुदेत् (lies: ऽनिर्णुदेत्) MBh. 12, 10728.

— परा wegstossen, — drängen, — treiben, entfernen RV. 1, 39, 2. परा शर्षत् नुनुदे अभि ताम् 7, 18, 16. 32, 25. 8, 14, 9. परावतं नुदेयाम् von der Stelle rücken 1, 116, 9. AV. 3, 18, 3. तत्रः पराणुद विभो कश्मलं मा-नसं मक्त् Bhāg. P. 3, 7, 7. तां चापि युष्मच्छरणसेवयाहं पराणुदे 18.

— परि herabstossen: नुत्या अर्च्युत् सदसस्पति स्वात् (अद्रिम्) RV. 6. 17, 5. hineinstossen in, verwunden: नखदशनैर्धात्रौमात्मनं च परिणुदति Suçr. 1, 375, 6.

— प्र fortstossen, vordrängen, forttreiben, verscheuchen AV. 1, 7, 4. 2, 25, 5. 3, 6, 8. VS. 2, 30. 13, 1. सा नो भूमिः प्र णुदतां सपत्नान् AV. 12, 1, 41. PANKAV. Br. 20, 6, 1. Kauç. 48. स शत्रुसेनो तस्मा प्रणुद्य MBh. 4, 1660. 5, 1863. 14, 224. नावमन्येदभिगतं न प्रणुयात्कथंच न 13, 3212. अन्धकारं प्रणुदनुदतिष्ठत चन्द्रमाः 4, 1068. बुद्ध्या भयं प्रणुदति 3, 1311. गावो ममैनः